काशी मरणान्मुक्ति
लेखक- मनोज ठक्कर, रश्मि छाजेड़
प्रकाशक - शिवऊँ प्रकाशन, इन्दौर
(तृतीय संस्करण)
मूल्य रु. 360/-

काशी-मरणान्मुक्ति : एक असमाप्त गाथा

जीवन के परम सत्य को जान लेने की किसकी इच्छा नहीं होती, वह कौन है जो कमल के पत्रों की तरह अथाह जल राशि में भी निःस्पृह, निर्वैर, निःचल बना रहता है और वह कौन है जो बार-बार यह कहने पर कि 'पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं' गुर बना रहता है ?

काशी मरणा-मुक्ति जैसे अद्भुत कृति में लेखकद्वय मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़ ने अपनी परा कल्पना से ज्ञान वारिधि में अवगाहन करते हुए देश के उन करोड़ों पाठकों को भी अवगाहन के लिए खुला आमंत्रण दिया है जो जन्म, मृत्यु और मुक्ति के अलावा सुख-दुख राग द्वेष के स्रोत को जानना चाहते उनके स्वरूप से दो चार होना चाहते हैं तथा 69 अध्यायों में फैली इस 'कथा' के प्रत्येक अध्याय की अंतिम पंक्ति का रहस्य क्रमशः स्पष्ट करते जाते हैं। 'पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं' जैसा सूत्र वही कह सकता है जो मुक्ति को हृदयङ्.म कर चुका हो और जिसने यह आभास कर लिया हो कि जिस शिष्य का वह गुरु नहीं होने की बात करता चला आ रहा है वह शिष्य स्वयं मुक्ति का ही रूप है- मुक्ति उस तक आते-आते मुक्त हो जाती है और शव में समाहित हो उसे शिव बना देती है।

यह एक अनपेक्षित सी गाथा है- कथा है, जिसे प्रगति की प्रतीक इक्कीसवीं सदी में दो युवा लेखकों की कलम से निःसृत होकर मुक्ति मिली है। जाति, छूत, अछूत, वर्ण,वर्ग से उपर उठी हुई इस गाथा में यदि कबीर अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ अदृश्य होकर भी उपस्थित है तो तुलसी, सूर, जैसे काव्य ऋषि भी अपने मन्तव्यों के साथ मौजूद है और कथा की ज्योति को, कथा के मर्म को ठीक उस दीये की तरह पुण्य सलिला के प्रवाह में प्रवाहित होते हुए भी प्रेरक बनाते हैं तथा अपनी उपस्थिति को प्रमाणित करते हैं। काशी को मुक्ति का केन्द्र कहकर लेखकद्वय ने भले ही कोई नवीन अवधारणा प्रस्तुत नहीं की हो, किन्तु काशी, मुक्ति और शिवतत्व को जोड़कर एक नए शिवत्व : एक नए शिवालय को रचकर एक बड़ी लकीर खीचीं है- महा को महाकाल बनाकर मुक्ति को परिभाषित किया है। मुक्ति को शब्द के अर्थ से मुक्त करने का श्लाध्य उपक्रम किया है! प्रकाशक और लेखक द्वय बधाई के हकदार हैं!